चुनौतियों से जूझने का दूसरा नाम है खुश्बू दोशी

शिवेन्द्र प्रकाश द्विवेदी

हर इन्सान एक सपना देखता है अपने मन चाहे कैरियर के सफल निर्माण का, और यदि यह कैरियर सफलता पूर्वक निर्मित हो रहा हो फिर अचानक से उस भरे पूरे कैरियर को छोड़ कर लौटना पड़े तथा जाना पड़े एक ऐसी दिशा मे जिनके रास्तों के बारे में इन्सान बिल्कुल अनजान हो तो एक बारगी कैसा लगेगा?

निश्चित रूप से आम इन्सान के लिए यही एहसास एक बडा सवाल बन कर खडा हो जायेगा उसे हताशा और निराशा के अन्धकूप मे ढकेलने के लिये। बावजूद इसके करोड़ों इन्सानों के बीच कुछ खास लोग होते हैं, जो हर हाल मे निर्णायक होते हैं, सुलझे हुए दिमाग से गम्भीर फैसले लेना और भय, हताशा व निराशा को तलवे से रौदते हुये खुद के अन्दर आशा विश्वास सद्भाव प्रेम की लौ जलाये अपने विजय पथ की तरफ आगे बढ़ जाना ऐसे लोगो का शगल होता है। इन्ही लोगो में गर्व से दमकता हुआ एक नाम है खूश्बू दोशी।

प्रत्येक इंसान की तरह खुश्बू ने भी एक सपना देखा था और उसे साकार करने के लिए उन्होने आर्कीटेक्चर किया, फिर लंदन से इंडस्ट्रियल डिजाइनिंग का कोर्स शुरू किया, कैरियर के इसी पड़ाव पर पिता चन्द्र कान्त दोशी की अस्वस्थता को देखते हुये उनकी इस इकलौती संतान खुश्बू ने यह फैसला किया कि उन्हे पिता की देखभाल एवं सेवा के लिए हर हॉल में राजकोट में रहना चाहिये, मात्र 21 वर्ष की उम्र में खुश्बू के इसी गम्भीर और निर्णायक फैसले ने उनके सपनो की दिशा मोड़ दी। वे राजकोट वापस आ गयीं, और पिता की सेवा करने के साथ अपने चाचा राजेश दोशी और पिता चन्द्रकान्त दोशी की मेहनत से खड़ी की गयी कम्पनी राजू इंजिनियर्स के कार्यो में हाथ बंटाने लगी, निश्चित रूप से यहॉ खुश्बू के लिए बिल्कुल नये क्षेत्र मे काम करना बड़ी चुनौती थी ।

लेकिन पितृ प्रेम के आलोक में उन्होने इस नये रास्ते पे अपना एक मजबूत कदम रखना शुरू किया, मजबूत लीडरशिप स्केल और अपने अन्दर सीखने के अदभुत क्षमता

की वजह से उन्होने चन्द ही समय में इस अचीन्हे बिजनेस की हर बारीकीयों पर अपनी मजबूत पकड़ हासिल की। करीब दो वर्ष बाद जब खुश्बू से पूछा गया कि आपको ऐसी कौन सी जिम्मेदारी दी जाये जिसे आप सरलता से निभा सकें। तो उन्होंने एक दिन सोचने का वक्त मांगा और लोगो को हैरत मे डालते हुये आफ्टर सेल्स सर्विस की जिम्मेदारी सम्हालने की बात कही। बताते चलें कि मशीनरी व्यवसाय मे आफ्टर सेल सर्विस बेहद महत्वपूर्ण होंने के साथ ही सबसे चुनौती भरा काम होता है। पिता चन्द्रकान्त दोशी और चाचा राजेश दोशी ने इस चुनौती भरे कार्य की तरफ इशारा करते हुये खुश्बू को यह समझाने की बहुत कोशिश की कि वह उसके जगह कोई दूसरा काम संभाल ले, परन्तु खुश्बू के लिए उस काम का मायने ही क्या था जिस काम में कोई चुनौती ही न हो। और फिर खुश्बू ने इस कठिन काम को मेहनत और लगन से इतनी सरलतापूर्वक निभाया कि तमाम लोग उनके कार्यों के प्रशंसक हो गये। वर्ष 2013 में खुश्बू के पिता चन्द्रकान्त दोशी ने जीवन की अन्तिम सांस ली, परन्तु आखिरी वक्त उनके चेहरे पर संतोष की यह छाया थी कि वे खुश्बू दोशी के सुयोग्य हाथों में कम्पनी के भविष्य की कमान सौप के जा रहें हैं। आज के दौर में महिलायें जो खुद को पुरूषों की अपेक्षा समाज मे कमजोर व अक्षम समझती हैं उन्हे खुश्बू दोशी से प्रेरणा मिल सके इसलिये आइये जानते है प्लास्टिक इंडस्ट्री के इस उदीयमान नक्षत्र से उन्ही के शब्दों में उनकी सोच और उनके सपनों के बारे में–

अपने बारे में – मैने जब बिजनेस ज्वाइन किया था तब बस एक ही एजेंडा था पापा के साथ रहना है आज इस बात को आठ साल हो गये अभी मै कंपनी मे आफ्ट्रर सेल सर्विस यानि कस्टमर सपोर्ट जो होता है वह देखती हूँ, मार्केटिंग एण्ड कम्युनिकेशन देखती हूँ।

सब कुछ यहीं इंडस्ट्री मे रहकर सीखा– खुश्बू बताती है कि मैने इंडस्ट्री से बहुत कुछ सीखा क्योंकि मेरी बैकग्राउंड प्लास्टिक नही थी प्लास्टिक कहते किसको है यह भी इसी इंडस्ट्री ने सिखाया है, इतने बड़े–बड़े मशीन बनते कैसे हैं चलाते कैसे हैं यह सारी चीजें मैने यही रहकर ही सीखी हुई है, क्योकि बहुत सारे बड़े लोग जो इस इंडस्ट्री में जमे हुये हैं मै तो इनके लिए एक बच्ची सी हूँ तो मैने इन सब लोगो से सीखा और यह महसूस किया कि दुनिया में बहुत सारे मैटेरियल प्लास्टिक रिप्लेस कर सकता है। इन सबसे मेरी इस इंडस्ट्री मे बड़ी दिलचस्पी हुई, सही बोलें तो यह गजब का

एक कार्यक्रम के दौरान गुजरात की मुख्यमंत्री आनन्दी बेन पटेल के साथ खूश्बू दोशी

मैजिक मैटेरियल है। सुश्री खुश्बू दोशी के अनुसार दुनिया का हर बिजनेस इंसान के लिए कभी न कभी नया होता है ऐसे में हर इंसान को बिजनेस के लिये अपने मन में सही दिलचस्पी पैदा करना चाहिये।

प्लास्टिक इंडस्ट्री के बारे में– खुश्बू का मानना है कि भारतीय प्लास्टिक इंडस्ट्री से हर छोटे से छोटे प्लेयर को इंडस्ट्री के लिये अपना सर्वोत्कृष्ट योगदान देना चाहिये वे आगे कहती हैं कि हमारे यहाँ बहुत सी कपनियां है जो यूरोपियन स्टैंडर्ड के हिसाब से मशीन बनाती हैं ऐसे में देश की इंडस्ट्री में ग्रोथ की संभावनायें है। इसीलिये हमारी सरकार को भी ठीक उस तरीके का सहयोग करना चाहिये जैसे चाइना की सरकार चाइनीज इंडस्ट्री व सप्लायर को सपोर्ट करती है, जैसे जर्मन गर्वमेंन्ट जर्मन व्यवसायियों का सहयोग करती है। यदि इंडियन प्लास्टिक इंडस्ट्री के लिये ऐसी ही नीतियां बने तो हम और अधिक बेहतर तरीके से ग्रो कर सकते है।

कुछ भी नामुमकिन नही– खुश्बू के मुताबिक महिलाओं को भी व्यवसाय में अपनी भागीदारी सुनिश्चित करनी चाहिये क्योकि दुनिया में कोई भी काम नामुमकिन नही है। खुश्बू महिलाओ को प्रत्येक क्षेत्र में आगे बढ़ने की हिमायत करते हुये बताती हैं कि हमने खुद अपनी फैक्ट्री में महिलाओ की भागीदारी सुनिश्चित की है और प्रयास है कि चाहे वह डिजाइनिंग हो, प्लानिंग हो, परचेज हो हर एक डिपार्टमेंट में कम से कम एक महिला से शुरुआत की है तथा उसमें हमें और आगे जाना है जिससे अधिक से अधिक महिलाओ को इन कारपोरेट कर पायें।

जरुरी है संतुलन बनाकर चलना – सुश्री खुश्बू दोशी के अनुसार पूरी सृष्टि संतुलन पर ही टिकी है ऐसे में लड़कियों को भी बिजनेस करना है या कैरियर बनाना है तो बैलेन्स बनाकर ही चलना चाहिये। ऐसा नही की हम जॉब करें या बाहर काम करें तो घर में बिल्कुल काम ही न करें तो ये जो बैलेन्स है मै समझती हूँ लोगो से कही छूट जा रहा है, खुश्बू के मुताबिक आज के दौर में महिलाओं को घरवालो से बिना संम्पूर्ण सपोर्ट मिले वे लक्ष्य की तरफ आगे नही बढ़ सकतीं, ऐसे में फैमली मेम्बर्स भी बहुत ही इम्पार्टेंट हैं इसलिये मै प्रत्येक फैमिली से अपील करना चाहूँगी कि वे अपनी प्रतिभावान लड़कियों व बहुओ को आगे बढ़ने में सपोर्ट करें। ■

2018 के लिये प्लास्ट इंडिया को करनी होगी अधिक मेहनत-सुनील जैन

डायरेक्टर–राजू इंजीनियर्स

दिल्ली में जन्मे सुनील जैन का प्लास्टिक इंडस्ट्री से कई दशकों का नाता है। 1978में इंजीनियरिंग करने के बाद वे दिल्ली की ही एक पैकेजिंग इंडस्ट्री में लगभग एक दशक तक कार्यरत रहे, फिर लगभग आधे दशक तक केन्या में रहने के बाद पिछले ढेड़ दशक से दिल्ली में रहकर बतोर डायरेक्टर प्लास्टिक मशीनरी की दुनिया में बहुचर्चित कंम्पनी राजू इंजीनियर्स का काम काज सम्हाल रहे है।

प्लास्ट इंडिया, PMMAI जैसे प्लास्टिक व्यवसायियों के तमाम संगठनों में अपनी महत्वपूर्ण भूमिका निभाने वाले इन्ही श्री सुनील जैन से विगत दिनों संयुक्त व्यापार ने प्लास्ट इंडिया 2015 से जुड़े कई विषयो पर सार्थक बातचीत की प्रस्तुत है वार्ता के महत्वपूर्ण अंश–

संयुक्त व्यापार – प्लास्ट इंडिया 2015 और प्लास्ट इंडिया 2012 में क्या तुलना करते है आप?

श्री सुनील जैन – 2012 में प्लास्ट इंडिया एग्जिबिशन विश्व की टाप 3 एग्जिबिशन में गिना जाता रहा है। इस लिहाज से इस बार 2015 एग्जिबिशन से फारेन एग्जिबिटर्स को काफी उम्मीदें थी परन्तु यह एग्जिबिशन इस इंटरनेशनल स्टेट्स को फुलफिल नहीं कर पाया, फारेन विजिटर्स बहुत कम आये, इसके अलावा जो इन्फ्रास्ट्रक्चर दिल्ली में है वो वहॉ नहीं मिला, होटल, फ्लाइट कनेक्टिविटी इत्यादी की प्राब्लम थी जहॉ तक मै समझता हूँ स्थान परिर्वतन इसका उतना बड़ा कारण नहीं था, जितना कि देर से लिया गया निर्णय कारण था। इन सबके वावजूद गुजरात सरकार और प्लास्ट इंडिया ने जितनी मेहनत की उसकी जितनी तारीफ की जाये वह कम है।

संयुक्त व्यापार – प्लास्ट इंडिया 2015 को कितना सफल मानते है, आप?

श्री सुनील जैन– एग्जिबिशन गांधीनगर शिफ्ट होने के और बहुत कम समय मिलने की वजह से उम्मीद बेहद कम थी परन्तु उस उम्मीद के हिसाब से देखा जाय तो एग्जिबिशन सक्सेज रहा, इंडियन विजिटर्स काफी संख्या में आये खास कर गुजरात व आस–पास के प्रदेशों से। इस प्लास्ट इंडिया का प्रभाव प्लास्ट इंडिया 2018 पर पड़ेगा इसलिये अगले वर्षों में प्लास्ट इंडिया को और अधिक मेहनत करने की आवश्यकता होगी। विदेशों में गॉधीनगर एग्जिबिशन की खासियत का बेहतर प्रमोशन करना होगा। अब अगली बार प्लास्ट इंडिया 2018 कामयाब होती है तो आगे के लिए यह बड़ी उपलब्धि हासिल कर पायेगी।

संयुक्त व्यापार–प्लास्ट इंडिया 2018 और अधिक बेहतर कैसे हो इसके लिए आपका सुझाव क्या है।

श्री सुनील जैन– इसके लिए मेरी समझ से तीन –चार महत्वपूर्ण चीजें है। पहला इसका प्रमोशन शुरू से हो, दूसरा इसकी पी आर एक्टीविटी बहुत सुनियोजित तरीके से हो तथा मीडिया व अन्य माध्यम से प्लास्ट इंडिया 2018 की खूबियों को एग्जाबिटर्स और विजिटर्स के बीच सही तरीके से पहुचाया जाये। तीसरी बात, लोगों के अन्दर कनेक्टविटी होटल इत्यादि को लेकर जो निगेशन है उसे दूर करने का बेहतर प्रयास बहुत ही आवश्यक है। ये सारी एक्टविटिज अभी से शुरू करनी होगी जिससे विजिटर्स एवं एग्जिविटर्स में कान्फिडेन्श आ सके। वैसे हमे प्लास्ट इंडिया और गुजरात सरकार पर भरोसा है कि उसने इतने कम समय में इतना अधिक काम किया है तो आने वाले दिनों में भी बेहतर उम्मीद की जा सकती है। ■